

आजाद सिपाही



सियासत : हेमंत सरकार ने जीता विश्वास मत, 48 विधायकों का मिला समर्थन आंदोनकारी का बेटा हूं, डरनेवाला नहीं : हेमंत

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखण्ड में मध्य सियासी घमासान के बीच हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली महागठबंधन सरकार ने सोमवार को सदन में विश्वासमत हासिल किया। हेमंत सरकार को 48 विधायकों का समर्थन एवं एनसीपी सदस्य गारंटीस्ट का बोट शामिल है।

इसमें एनसीपी सदस्य और मनोनीत सदस्य भाजपा, आजसू के साथ विधायक सरयू राय और अमित कुमार ने वोटिंग के समय सदन का बहिष्कार किया। बता दें कि इसको लेकर सोमवार को झारखण्ड विधानसभा का एक दिन के लिए विधायक सत्र (वर्ष मानसुन्दर सत्र का विस्तार) बुलाया गया था। सरयू शुरू होते ही वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति के बीच हेमंत सोरेन ने सदन में विश्वासमत हासिल करने सोमवार को खुद से लेकर विधानसभा आये थे। इस दौरान भाजपा विधायकों ने विधानसभा के समाने प्रदर्शन किया। वे सोरेन के विधायकों के छोटीसगड़ जाने और दुमका हत्याकांड का मुद्दा उठा रहे थे। सदन खण्डित होने के बाद

सीएम हेमंत सोरेन एक बार फिर से सभी विधायकों के साथ बस में सवार होकर सर्किट हाउस के लिए निकल गये। वहाँ मुख्यमंत्री ने विधायकों के साथ लंच किया।

झारखण्ड विधानसभा में जारी एक दिवसीय सत्र के दौरान सरकार की ओर से सदन के नेता हेमंत सोरेन ने जवाब दिया। सीएम सोरेन ने कहा कि विषय से निवेदन है कि बस के दौरान नोक-झोक होती रहती है। आग्रह यह है कि कुमार ने वोटिंग के समय सदन का बहिष्कार किया। बता दें कि इसको लेकर सोमवार को झारखण्ड विधानसभा का एक दिन के लिए विधायक सत्र (वर्ष मानसुन्दर सत्र का विस्तार) बुलाया गया था। सरयू शुरू होते ही वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति के बीच हेमंत सोरेन ने सदन में विश्वासमत हासिल करने सदन का बहिष्कार किया। बता दें कि आज संसद ही नहीं होते। सीएम ने कहा, आज विश्वास मत को लेकर चर्चा हो रही है। लोग कह रहे हैं कि अगर सरकार के पास बहुमत है तो स्थगित कर दिया। सोमवार की विधायक सत्र के बाद जरूरत है। सुबह हेमंत सोरेन अपने विधायकों को खुद से लेकर विधानसभा आये थे। इस दौरान भाजपा विधायकों ने विधानसभा के समाने प्रदर्शन किया। वे सोरेन के विधायकों के छोटीसगड़ जाने और दुमका हत्याकांड का मुद्दा उठा रहे थे। सदन खण्डित होने के बाद

पक्ष में वोट : 48

विपक्ष में वोट : 0



झारखण्ड विधानसभा की दलगत स्थिति

कुल सीटें 81 : बहुमत के लिए मतों की जरूरत-41
झामुमो 30, कांग्रेस 18 (प्रदीप यादव को मिलाकर), माले-1, एनसीपी-1, राजद-1, भाजपा 26 (बाबूलाल मराड़ी को मिलाकर), आजसू 2, निर्दलीय 2 और मनोनीत-1

मतदान में हिस्सेदारी

पक्ष : झामुमो के 29, कांग्रेस के 15, एनसीपी के 1, माले के 1, राजद के 1 और मनोनीत 1 वोट मिले।
(कांग्रेस के तीन विधायकों को लेकर कालकाता में हैं।)
विपक्ष : भाजपा, आजसू और निर्दलीय विधायक बहिष्कार कर सदन के बाहर चले गये।

कांग्रेस का वात भी भाजपा विधायक नहीं मान रहे थे। इन लोगों (भाजपा) ने सिफारियों की मदद की : सीएम ने कहा कि सबका साथ सबका विकास का नारा देनेवाले इन लोगों ने सिफारियों की मदद की। पेशन देने का इनके पास पैसा नहीं है। इन लोगों ने पूरे देश को ताक पर रखने का काम किया है। गैर भाजपा राज्यों में जैसे-तैसे अस्थिर करने का काम हो रहा है। गरीबों के लिए इनके पास पैसा पैसा नहीं है। इनके कारनामों को लिखना शुरू किया जाये तो लिखते-लिखते स्थानी खत्म हो जायेगी। सरकार के खिलाफ दूष्प्रचार का काम तामाम मीडिया और सोशल मीडिया के जरिये किया जा रहा है।

झांडा लगाने का काम हुआ। झांडा लगाने का वाले लोगों ने तो झांडा लगाने का भी काम किया। भाजपा वालों ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। लोकतंत्र को देख में आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनायी जा रही है। सङ्ककों पर भी काम क्या होता। व्यक्ति ये बोलते हैं कि हवाई चपल वाले को हवाई जाहज पर चढ़ायें और लाकर सड़क पर छोड़ दिया गया। देश में आजादी तो पता नहीं रही है। लोकतंत्र को देखने के लिए अपनी ही सरकार के विधायक और मंत्री राज्य के विधायकों पर विश्वास देनी है। उन्होंने कहा कि इसके बाद नहीं रही है, जो आत्मविश्वास सदन में 2019 में जीत कर आने के बाद यूपी के विधायकों में था, वो आज बिल्कुल नहीं दिख रहा है। साथ खड़े हो रहे लोकतंत्र से ज़लक नहीं रहा। अपनी सरकार में विश्वास जीतने के लिए अपनी ही सरकार के विधायक और मंत्री राज्य से बाहर नहीं जाते। उन्होंने कहा कि इससे बेहतर होता सरकार स्थानीय नीति, नियोजन नीति, जातीय जनरणना, और ओबीसी अरक्षण पर चर्चा कराती। ऐसा क्या हो गया है कि विधायकों को मुख्यमंत्री के दरवाजे से विधानसभा में आना पड़ा।

अपने विधायकों पर ही विश्वास नहीं : सुदेश

रांची। आजसू नेता सुदेश महतों ने सदन में कहा कि सत्तापक जो बहुमत साबित कर रहा है, वो गलत है। किसी ने उनसे

बहुमत साबित करने को कहा ही नहीं है। शब्द यूपी के अधिकारी ने कर्मवाई नहीं करता। सदन में अधिकारी विश्वास विधायकों द्वारा देखा गया था वे सबल में भी मन में है। उन्होंने कहा कि पास नहीं सदन की कार्यवाई के बाद यूपी के विधायक कर्मवाई विधायकों के बाद जायेंगे। फिर से शब्द यूपी के विधायक कर्मवाई विधायकों के बाद जायेंगे। यह अभी तक साफ नहीं हुआ है। इस पर मंत्री बना गुता ने नाराजी जाती ही तो दोनों के बीच तीखी नोकझोक ढूँढ़ रहा। अपनी सरकार में विश्वास जीतने के लिए अपनी भाजपा के विधायकों को आपने कर्मवाई करनी चाहिए। यूपी के तीन विधायक आज कोलकाता में हैं। आज तीन हैं कल तेहर होंगे। सरयू राय ने कहा कि मंत्री अपने भ्रष्ट आचरण का प्रमाण दे रहे हैं, लेकिन सीएम कोई कर्मवाई नहीं कर रहे हैं।



रांची। आजसू नेता सुदेश महतों ने सदन में कहा कि सत्तापक जो बहुमत साबित कर रहा है, वो गलत है। किसी ने उनसे

बहुमत साबित करने को कहा ही नहीं है। शब्द यूपी के अधिकारी ने कर्मवाई नहीं करता। सदन में अधिकारी विश्वास विधायकों द्वारा देखा गया था वे सबल में भी मन में है। उन्होंने कहा कि पास नहीं सदन की कार्यवाई के बाद यूपी के विधायक कर्मवाई विधायकों के बाद जायेंगे। फिर से शब्द यूपी के विधायक कर्मवाई विधायकों के बाद जायेंगे। यह अभी तक साफ नहीं हुआ है। इस पर मंत्री बना गुता ने नाराजी जाती ही तो दोनों के बीच तीखी नोकझोक ढूँढ़ रहा। अपनी सरकार में विश्वास जीतने के लिए अपनी भाजपा के विधायकों को आपने कर्मवाई करनी चाहिए। यूपी के तीन विधायक आज कोलकाता में हैं। आज तीन हैं कल तेहर होंगे। सरयू राय ने कहा कि मंत्री अपने भ्रष्ट आचरण का प्रमाण दे रहे हैं, लेकिन सीएम कोई कर्मवाई नहीं कर रहे हैं।

रांची। आजसू नेता सुदेश महतों ने सदन में कहा कि सत्तापक जो बहुमत साबित कर रहा है, वो गलत है। किसी ने उनसे

बहुमत साबित करने को कहा ही नहीं है। शब्द यूपी के अधिकारी ने कर्मवाई नहीं करता। सदन में अधिकारी विश्वास विधायकों द्वारा देखा गया था वे सबल में भी मन में है। उन्होंने कहा कि पास नहीं सदन की कार्यवाई के बाद यूपी के विधायक कर्मवाई विधायकों के बाद जायेंगे। फिर से शब्द यूपी के विधायक कर्मवाई विधायकों के बाद जायेंगे। यह अभी तक साफ नहीं हुआ है। इस पर मंत्री बना गुता ने नाराजी जाती ही तो दोनों के बीच तीखी नोकझोक ढूँढ़ रहा। अपनी सरकार में विश्वास जीतने के लिए अपनी भाजपा के विधायकों को आपने कर्मवाई करनी चाहिए। यूपी के तीन विधायक आज कोलकाता में हैं। आज तीन हैं कल तेहर होंगे। सरयू राय ने कहा कि मंत्री अपने भ्रष्ट आचरण का प्रमाण दे रहे हैं, लेकिन सीएम कोई कर्मवाई नहीं कर रहे हैं।

रांची। आजसू नेता सुदेश महतों ने सदन में कहा कि सत्तापक जो बहुमत साबित कर रहा है, वो गलत है। किसी ने उनसे

बहुमत साबित करने को कहा ही नहीं है। शब्द यूपी के अधिकारी ने कर्मवाई नहीं करता। सदन में अधिकारी विश्वास विधायकों द्वारा देखा गया था वे सबल में भी मन में है। उन्होंने कहा कि पास नहीं सदन की कार्यवाई के बाद यूपी के विधायक कर्मवाई विधायकों के बाद जायेंगे। फिर से शब्द यूपी के विधायक कर्मवाई विधायकों के बाद जायेंगे। यह अभी तक साफ नहीं हुआ है। इस पर मंत्री बना गुता ने नाराजी जाती ही तो दोनों के बीच तीखी नोकझोक ढूँढ़ रहा। अपनी सरकार में विश्वास जीतने के लिए अपनी भाजपा के विधायकों को आपने कर्मवाई करनी चाहिए। यूपी के तीन विधायक आज कोलकाता में हैं। आज तीन हैं कल तेहर होंगे। सरयू राय ने कहा कि मंत्री अपने भ्रष्ट आचरण का प्रमाण दे रहे ह

विशेष सत्र : झारखंड विधानसभा के विशेष सत्र में दिखा मुख्यमंत्री का आक्रामक चेहरा

हेमंत बोले, खूब बोले और क्या नहीं बोले

5 सितंबर, 2022 को झारखंड विधानसभा का विशेष सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में हेमंत सोरेन सरकार द्वारा पेश विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हुई और बाद में मत विभाजन हुआ। विश्वास प्रस्ताव पर हुई चर्चा के जवाब में मुख्यमंत्री हेमंत

सोरेन ने पहली बार इतने आक्रामक तरीके से अपनी बात रखी। खूब बोले, क्या कुछ नहीं

विपक्ष से आग्रह है कि वह बहस से भागे नहीं

अपने भाषण की शुरूआत में मुख्यमंत्री ने कहा, विपक्ष के साथीयों से करबद्ध प्रार्थना है कि बहस से भागे नहीं। बहस के दौरान नोक-झोक तो होती रहती है और सब एक-दूसरे की बात सुनते भी हैं। जिनको जरूरत पड़ती है, फोन लगा करके सुन लेते हैं। इसलिए मेरा आप लोगों से आग्रह होगा कि इस प्रस्ताव को आप लोग कृपया पूरा सुनें और मैटान छोड़ कर भागने का प्रयास न करें।

राज्य की सवा तीन करोड़ जनता में आप भी हैं, हम भी हैं

मुख्यमंत्री ने कहा, झारखंड की सवा तीन करोड़ जनता इस चर्चा को देख-सुन रही है। यह विधानसभा सवा तीन करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व करती है। इस सवा तीन करोड़ जनता में आप लोग भी शामिल हैं और हम भी। इसलिए जब हम राज्य के सवा तीन करोड़ लोगों को संतुष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं, तो स्वाभाविक रूप से इसमें आप लोग भी शामिल हैं। आपको भी संतुष्ट करने का हमारा प्रयास होगा, हालांकि आप लोगों की चाहत और आप लोगों की इच्छा इतनी ऊंची है कि आपको संपुष्ट करना मुश्किल है।

विश्वास प्रस्ताव की जरूरत वर्णन

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा, विश्वास प्रस्ताव को लेकर यहाँ आज सत्र खुलाया गया है। कई लोग कह रहे हैं कि हमारी सरकार को बहुमत है, तो विश्वास मत की क्या आवश्यकता है। इस प्रस्ताव के माध्यम से हम और यह सरकार यह साबित करता चाहती है और देश को, राज्य की जनता को यह बताना चाहती है की वर्तमान हमारी यूपीए की सरकार को विश्वास हासिल है। किसी



अंदाजा लगा सकते हैं कि झंडा बेचने के साथ-साथ लोगों ने क्या-क्या किया। पूरे जीवन में तिरंगा झंडा तो इन लोगों ने फहराया नहीं, और जब बेचने की बारी आयी, तो लोग झंडा बेचने। यहीं इनका दोहरा चेहरा है।

बीजेपी ने लोकतंत्र को बेचा

मुख्यमंत्री को कहा, बीजेपी ने लोकतंत्र को बेचा है। इन लोगों के पास जनता को देखे के लिए पैसा नहीं है और राज्य सरकारों पर रेवड़ी देने का आरोप लगाते हैं। देश की गैर भाजपा सरकार को संवैधानिक संस्थानों का दुरुपयोग करके परेशान करने का काम किया जा रहा है। ये लोग हाथी उड़ाने का काम करते हैं, सेने की थालियों में खाना खाते हैं। ये लोग देश को बांबने का काम कर रहे हैं। जहां हिंदू-मुस्लिम की लड़ाई होती है, वहां ये हाथी जाते हैं।

गृह युद्ध की स्थिति पैदा कर चुनाव जीतना चाहती है भाजपा

हेमंत ने कहा, भाजपा चुनाव जीतने के लिए दोनों भड़का कर देश में 'गृह युद्ध' जैसे हालात पैदा करने की कोशिश कर रही है। आज ये ऐसी स्थिति पैदा करना चाहते हैं कि एक राज्य को दूसरे राज्य से लड़ाने में लगे हुए हैं। ये गृह युद्ध की स्थिति पैदा करना चाहते हैं कि हवाई जहाज पर घुमायें, लेकिन कोरोना महामारी के दौरान उड़ाने तो गरीब मजदूरों को सड़क पर भी नहीं चलने दिया। डंडा मार कर भगवा। उड़े भीख

मारने लायक भी नहीं छोड़ा।

हेमंत ने कहा, भाजपा को राज्यपाल की शुरूआत में आजादी की 75वीं वर्षांत मन रहा है। हम आजादी के 76वें वर्ष में हैं। इस दौरान देश में जिस तरीके से झंडा लगाने का एक एंजेंट फिट किया गया, वह अपने आपमें अनोखा है। जिस तरीके से हमारे भारतीय जनता पार्टी के साथियों में झंडा बेचने का काम किया है, वह भी पूरे देश को पता चला। आप

को अस्थिर करने का प्रयास कर रही है। 2024 के लिए इन्होंने सर्वे कराया है, जिसमें इनका सूपड़ा साफ होता दिख रहा है, इसलिए सरकार को अस्थिर करने का प्रयास कर रहे हैं। इनकी खरीद-फोरेक्ष की जिम्मेदारी असर के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा पर है। ये जांच के लिए पुलिस का सहयोग नहीं करते रहे हैं। लोग बाजार से सामान खरीदते हैं, राशन खरीदते हैं, लेकिन बीजेपी विधायक खरीदती है। गैर बीजेपी सरकारों के संवैधानिक संस्थाओं का इस्तेमाल करके चाकरे बैठे हैं, जबकि लोग बाजार के लिए रेस्टॉरंट का विदेशी नाम लगाता है। यह नमैंने किसी तरह इनकी खाली खम्ब हो जायेगी। हमारी सरकार को बदलाने का वहां पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं। राज्यपाल राज्य में अस्थिरता पैदा करने के पिछले दरवाजे से निकल कर दिल्ली में जाकर बैठे हैं, जबकि उड़े चुनाव आयेंगे के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के परस्पर के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।

विधायकों के चाहेरे पर मुसकान देखते हैं। आयोग के परस्पर का सरकार को बताना चाहिए।</p

बहुमत : विधानसभा सत्र में हेमंत सोरेन सरकार ने दिखा दी अपनी ताकत धनि मत से पारित होने के बाद मत विभाजन कराया

आजाद सिपाही संवाददाता

सरकार ने जीत हासिल कर ली थी, लेकिन अपनी ताकत को पूर्ण रूप से साबित करने के लिए मत विभाजन करवा दिया। जिसके जरिये मंत्रिपरिषद् पर सभा के विश्वास को 100 फीसदी मुहर उतारा गया।

**धनिमत से पारित
हो यका था पस्ताव**

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने विश्वास प्रस्ताव सदन में रखा। इससे पहले विधानसभा अध्यक्ष ने दलों के संख्या बल के आधार पर सदस्यों को इसके पक्ष और विपक्ष में बोलेन के लिए समय अवैटिट



कर दिया था। मुख्यमंत्री के प्रस्ताव पर भाजपा के नीलकंठ सिंह मुंडा, सीपी सिंह, आजस के सदेश तभी संसदीय कार्यमंत्री आलमगीर आलम ने मत विभाजन का प्रस्ताव रख दिया।

48 के मकाबले

48 के मुकाबले थून्य रहा मतदान

इतना के बहार से तभी, भारत के विनोद सिंह आदि सदस्यों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किया। इसके बाद सरकार की तरफ से मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अपना पक्ष रखा। मुख्यमंत्री के पक्ष रखने के बाद प्रस्ताव पर ध्वनिमत से पारित करने की प्रक्रिया शुरू हुई। विधानसभा अध्यक्ष रवींद्रनाथ महतो ने कहा कि 'प्रश्न यह है कि यह सभा वर्तमान मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रकट करती है। जो इस प्रस्ताव के पक्ष में हैं वह हाँ कहें, जो विपक्ष में वह न कहें।' सदस्यों ने हाँ-न में जबाब दे दिया। ध्वनिमत से प्रस्ताव लगभग पारित हो चुका था। विधानसभा अध्यक्ष इसकी घोषणा भी करने लगे थे,

हंगामेदार रहा विधानसभा का विशेष सत्र

A collage of images from a protest. The top image shows a group of people holding placards with text in Hindi. Below it is a larger photo of a press conference with several men seated at a table, and a banner in the background. A small inset image in the bottom right corner shows a person working on a laptop.



विधायकों ने हांगमा शुरू कर दिया। हांगमे के बीच ही मुख्यमंत्री ने सदन में विश्वास प्रस्ताव रखा। इसके बाद भी सदन में हांगमे की स्थिति बनी रही। विपक्ष दुमका में लड़की जिंदा जलाने और दुष्कर्म की घटनाओं के माध्यम से सरकार को धेरा। हालांकि, सरकार की ओर से इसका जवाब दिया गया। करीब ढाई घंटे चले सत्र में लगातार हांगमा होता रहा। इसके साथ ही विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गयी।

विधायकों को खरीदना चाहती है भाजपा : प्रदीप यादव
विधायक प्रदीप यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री के विश्वास प्रस्ताव का मैं समर्थन करता हूँ। 2019 के बाद चार बार उपचुनाव हुए। हर बार यूपी की जीत हुई, इसलिए भाजपा डरी हुई है। उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि वो चुनाव लड़ना नहीं, बल्कि विधायकों को खरीदना चाहती है। 2014 गवाह है कि कैसे झारखंड विकास भोर्चा के विधायकों को भाजपा ने खरीदा। इस बात के और कोई नहीं बल्कि बाबूलाल मरांडी गवाह हैं। इसका प्रमाण मेरे पास है। चोर मचाये शेर वाली बात हो रही है। इसलिए विश्वास मत लाना जरूरी था।

हेमंत है तो हमें विश्वासः सदिव्य सोन

विधायक सुदित्य सोनू ने कहा कि विश्वास मत के प्रस्ताव का विरोध करने वाले लोगों को जनता के मैनडेट पर भरोसा नहीं है। 2019 में झारखंड की जनता ने ये बादा किया था कि हेमंत है तो हम्मत है। हेमंत है तो हमें विश्वास है। हमें विश्वास है कि झारखंड की हर बैठी के घास में हेमंत मरहम लगायेंगे। झारखंड की जनता बड़ी गौर से देख रही है। भाजपा आदिवासी मुख्यमंत्री बर्दाशत नहीं कर पा रही है, इसलिए सरकार को अपनास्थ करने की लगातार कोशिशें हो रही हैं।

राशिफल	
डॉ एनके बेरा	9431114351
मेष	कामकाज गें अनप्रेषित परिस्थितियों के बावजूद कुछ तत्त्वालिक समराऊओं का समानान हो सकेगा।
वृष	नन में चिरिंग आशकाएं और दुर्भविताएं पैदा होगी, अप्रत्यक्ष शत्रुओं से मानिक पीड़ा होगी।
मिथुन	हर्ष-घिसाद की समानता, अनेक विपद्धतियों का सामना करना होगा, मानसिक चिंता बढ़ेगी।
कर्क	आर्थिक स्थिति सुधृ, निर्माण कार्य में प्रगति, होनी-होनावाह के केंद्र में विपरीत व मानसिक तनाव कम होगा।
सिंह	नये लोगों से संपर्क, महिला नियंत्र के माध्यम से लाभ, शुभ समाचार निलंगा।
कन्या	विपरीत स्थितियों में सुधार, सामाजिक-सामाजिक विकास, शत्रुओं पर जियाय निलंगा।
तुला	सरकारी सेवा से जुड़े हैं तो आपको अनुकूल परिस्थितियों का लाभ निलंगा।
वृद्धिक	कर्जस्थिति में प्रतिश्रृंखला अधिक करना डैग्स, इस काम में अद्यतन आयोगी पर्यु कुछ आवश्यक काम बनेगा।
धनु	सरकारी उच्चाधिकारियों पर निजी प्रभाव शक्ति बढ़ेगी, नवीन व्यापारिक योजना सफल।
मकर	होजारा की दिशा में कार्यों की अधिकता रहेगी, निराशा दूर होगी, विद्या-युद्ध-प्रणाली का विकास।
कुंभ	धन एवं सुख की प्रति होगी, थोड़े परिश्रम से ही अनीट कार्य सिद्ध होगे।
मीन	गुणे विद्यर्पण प्रसंग पुनर्जीवित होंगे, परिश्रम से महत्वपूर्ण काम पूरा होगा।

प्रदीप यादव किस पार्टी की ओर से बोल रहे : रणधीर सिंह

इससे पहले प्रदीप यादव बोलने के लिए खड़े हुए तो भाजपा विधायक रणधीर सिंह ने इसका विरोध किया। रणधीर सिंह ने कहा कि प्रदीप यादव किस पार्टी के ओर से सदन में अपनी बात रख रहे हैं यह स्पीकर को स्पष्ट करना चाहिए।

The poster has a bright yellow background with a decorative border at the top. In the upper left, a man wearing a white turban and a white kurta-pajama is shown from the waist up, waving his right hand. To his right is a circular illustration of a large tree with green leaves and a person in a blue sari standing next to it. Below these images is a larger photograph showing a group of people in colorful traditional Indian clothing, some holding drums and other instruments, performing a folk dance or music. The overall theme is a festive celebration.

भारत सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

दमोहावेस
राज्यपाल, झारखण्ड

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

प्रकृति-पूजा कर्म परब एवं समस्त ज्ञानविद्वासियों को बधाईयां एवं जोहाए

'करमा' प्रकृति की आराधना का पर्व है। आज जब प्रकृति पर्यावरण असंतुलन के कारण मानवता संकट में पड़ती दिख रही है, ऐसे समय में 'करमा' जैसे प्राकृतिक पर्वों की महत्ता बढ़ जाती है। हमारे पूर्वजों ने जब प्रकृति को पदमेश्वर का प्रतिलिप मानकर उसकी पूजा-अर्चना प्रारम्भ की तब उसके पीछे एक सुचिन्तित दर्शन था। एक वैज्ञानिक चेतना थी। यह स्पष्ट समझ थी कि समस्त जीव-जगत एवं वनस्पति जगत के साथ सामंजस्य ही जीवमंडल में संतुलन दख पायेगा। हमारे पूर्वजों ने सात्त्विक भावना से वृक्षों के समूह को ईश्वर माना और नदियों को माँ कह कर पुकारा, आज उनकी उन भावनाओं की पुनः प्रतिष्ठा का संकल्प लें।

संपादकीय

बदलेगी राजनीति

कां ग्रेस पार्टी से इस्तीफा देने के बाद रविवार को जम्मू में हुई अपनी पहली लैली में गुलाम नवी आजाद ने नवी पार्टी बनाने का औपचारिक एलान कर दिया। जिस तहसे को कांग्रेस के स्थानीय नेताओं का उनके साथ आये का सिलसिला जारी है, उससे लगता है कि कम से कम जम्मू-कश्मीर में उनकी इस पहल को उम्मीद भरी नज़रों से देखा जा रहा है। हालांकि इनकी एक व्याख्या ऐसे भी की जा सकती है कि गुलाम नवी के कांग्रेस छोड़ने के बाद जम्मू-कश्मीर में उसकी रही-सही ताकत भी खत्म हो गयी और इसीलिए पार्टीजनों के एक बड़े हिस्से को कांग्रेस छोड़ने में ही भलाई दिख रही है। गौर करने की बात है कि पिछले कार्यों एक हफ्ते में एक पूर्व उपमुख्यमंत्री, आठ पूर्व मंत्री, एक पूर्व सांचे, नौ पूर्व विधायक सहित बड़ी संख्या में चाचों राज संसदों के सदस्य, नगर नियमों के सदस्य और ग्रामसूची लेवल के कार्यकारी कांग्रेस छोड़ चुके हैं। ये सब कार्यों और पार्टी में संभावनाएं देख रहे हैं। बाबूजूद इसके, जम्मू-कश्मीर में अगले कुछ महीने के अंदर संभावित चुनावों में इस नवी पार्टी के प्रदर्शन को लेकर कांग्रेस ठास निष्कर्ष निकालना अभी जल्दवाजी होगा। लोकन इसमें कोई शक नहीं कि गुलाम नवी आजाद होगा।

गुलाम नवी आजाद की नवी पहल से जम्मू-कश्मीर को एक ऐसा नेतृत्व दिला है, जो असंदिग्ध रूप से भारत समर्थक है, जो जम्मू-कश्मीर की राजनीति की सभी धाराओं से संवाद करने और तालमेल बनाने की स्थिति में है और जिसे केंद्र का भी विश्वास हासिल है।

और मुख्यधारा की राष्ट्रीय राजनीति करते हुए गुजरा है। जाहिर है, कश्मीरी राजनीति के इस तरह से उनका कार्ड जुड़वान नहीं रहा है। बाबूजूद इसके, पूरे जम्मू-कश्मीर में उनकी पहचान और पहुंच है। वहाँ के मुख्य राजनीतिक दलों के नेताओं से उनका मैत्रीपूर्ण संवाद है। नवी दिल्ली से भी उनका सौहार्दपूर्ण रिश्वा है, जो राज्यसभा में प्रधानमंत्री के भावुक भाषण और उन्हें इसी साल मिले प्रधानमंत्री समान से रेखांकित हो चुका है। इन सबके अलावा एक खास बात वह भी है कि वह सफ कर रुके हैं, अनेक लोगों में बीजेपी विरासी और कांग्रेस समर्थक भवतावाओं तक पहुंचने की उनकी राह खुली हुई है। ऐसे में गुलाम नवी आजाद की नवी पहल से जम्मू-कश्मीर को एक ऐसा नेतृत्व मिला है, जो असंदिग्ध रूप से भारत समर्थक है, जो जम्मू-कश्मीर की राजनीति की सभी धाराओं से संवाद करने और तालमेल बनाने की स्थिति में है और जिसे केंद्र का भी विश्वास हासिल है। मौजूदा हालात में वह कोई छोटी बात नहीं।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ सम्पूर्ण समाज का संगठन है। समाज के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्र हैं। पर संघ के स्थानीय संगठन नहीं है वह सम्पूर्ण समाज का संगठन है। संघ का स्वयंसेवक समाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, राजनीति, सेवा, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में सक्रिय होते हुए भी संघ इसमें से केवल कोई भी एक संगठन नहीं है। संघ स्थापना के समय से ही संघ परिवर्तन की जगत है कि आज के दौर में संघ की प्रासारिकता बहुत बढ़ चुकी है। अपनी स्थापना से लेकर आज तक बिना किसी आधार के जितनी आलोचनाएं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने ज्ञाली, शायद ही दुनिया के किसी संगठन ने ज्ञाली। देश में जिन्होंने तुष्टिकरण का एजेंडा चलाया, संघ उनके निशाने पर रहा और आज बॉर्डर के बाहर जो देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं, वो भी इस संगठन को पानी पी पोकर कराए हैं। नवे भारत के निर्माण की जिम्मेदारी लावे हाथों के निर्माण की नींव में संघ के विवारों का महत्वपूर्ण योगदान है।

इशावास्य उपनिषद के पांचवें मंत्र में आत्म तत्त्व का वर्णन इस प्रकार हुआ है—

तदेजित तन्नैजित तद्वै तद्विनिके..

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य वादातः..

अर्थात् वह आत्म तत्त्व चलता है और नवी भी चलता है। वह दूर है और समीप भी है। वह सब के अंतर्गत है और वही सब के बाहर भी है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

संघ पर भी यहीं मंत्र लागू होता है। संघ के विद्यार्थी, मजदूर, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक आदि विभिन्न क्षेत्रों को बिना के बातों का विवास्य होता है।

<p

